Part 2

प्रस्न 1 रास्ट्रीय एकताक महत्व कें सारांश लिखू ।

श्रींनगर पूर्नियाँक राजकुलक राजकुमार, श्री कुमार गंगा नन्द सिंहक नाम आधुनिक मैथिली कथाक आदरक संग लेल जाइछ । हिनक उपन्यास अगिलही मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि अछि । श्रीकुमार साहेब राज्काजमे ओक्षायले नहि रहलाल , अपितु राजनितीक , साहित्यक आ शैक्षनिक क्षेत्रोंमे अपन बहुमूल्य योगदानक छप छोरि गेलाह । कथा,उपन्यास , एकांकी आदिक रचनासँ मैथिली साहित्यक इतिहासमे अमर विभूति बनि गेलाह । कुमार साहेब भोल छक्षनामसँ मनुशय्क मोल कथा जे 1924 मे प्रकाशित भेल से मैथिलिक आरम्भिक कथामे अबैत अछि । एकरबाद विवाह , पंदित पुत्र , पंनचपरमेश्वर , आमक गाछी आ विहारि प्रकाशित अछि ।

एकता आ रास्ट्रक शक्तिमे अभिन्न सम्बंध अछि । कोनो रास्ट्र ताबत हश्टपुस्ट बलिस्ट नहि कलह जा सकैछ , जावत ओकर विभिन्न अंगमे , पारस्परिक एकात्मकता न्हि होइक । ओना तँ

Scanned by CamScanner

मनुस्य रूप , रंग , जाति धर्म , योग्यता , स्वभाव आदिमे एक दोसरा सँ भिन्न रहैत अछि ।

भारत पर जखन कहियो रास्ट्र संकट आयल तँ सम्पूर्न रास्ट्र पर महाभारतक एहि श्लोकक प्रभाव श्पश्ट देखल गेल । यथा -

वयं पंच वयं पंच , वयं पंच शतानिते ।

अन्यैः महा विवादेतु वयं पंचाधिकशतम ।"

कौरवकें ल्क्ष्य क युधिश्टिर कहैत छथि जे ओना तँ हमरा लोकनि पाँच भाइ छी , एकसय पाँच भाइ छी । ई भावना समस्त भारतमे देखल जाइछ । अंग्रेजक दासतक विरूध्द संघर्शमे सम्पूर्न भारतमे एक भावना छल । ओहिना 1962 मे चीनसँ भेल लराई वा पाकिस्तानसँ भेल युध्द मे सम्पूर्न भारतवासिक एकताक अटूट बंधनकें सभ अनुभूति कैलनि । जे कोनो देश भारतसँ भारतक एक्ताक एकता अखंडता आ प्रगतिसँ ईश्या रखैत अछि । ओ हमरा सभक आन्तरिक एकताकें भंग करबा लेल सतत् प्रयत्नशील रहैत अछि ।समस्त भारतीये ई बुक्षैत अछि । जे रास्ट्र एक शरीर थिक जकर अंग छैक राज्य , क्षेत्र , भाशाक भिन्न भिन्न रूप । जाहिना शरीरक एक अंगमे

Scanned by CamScanner

पीरा होईत छैक त समस्त शरीर ओकर अनुभूति करैत अछि ताहिना रास्ट्रक कोनो भागमे सुख-दुःखक अनुभूति सम्पूर्न लोकनिमे सतत् बनल रहै तखने रास्टीय एकात्मकताक रक्षा क सकैत छी ।हमरा सभ श्रीदुर्गाशप्तशतीमे छी जे असुरक अत्याचारसँ पीडीत देवगन अपन एकताक प्रदर्शनक प्रतीक आदिशक्ति दुर्गाकेँ आव्हान कैलनि आ तकने ओ विजयी भेलाह।

Scanned by CamScanner